श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति
सा विद्या या विमुक्तये
सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद Answer-Sheet

अभ्यासक्रम क्रं. : ७

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ____ शहर ____

विद्यार्थी का नाम ____

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	परमात्मद्रव्य
(२)	अष्टमंगल
(३)	श्री औपपातिक
(४)	गोविंदशाह
(५)	क्रियाद्वार
(६)	क्षायिक भाव
(७)	जीव-अजीव
(८)	उद्घोषणा
(९)	निर्मलता
(१०)	नागडा
(११)	मनवाले
(१२)	सात्विक आराधक
(१३)	कल्याणभाजो
(१४)	मडंदर
(१५)	वैमानिक
(१६)	निद्रा एवं प्रचला
(१७)	आत्मिक बोध
(१८)	पक्षापक्षी का उग्र
(१९)	वह आगति
(२०)	युगादिदेव चारित्र

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	ज्योतिष देवताओ
(२)	श्री वादीदेवसूरि
(३)	जिनबिंब,आगम के आधार से
(४)	बांधे
(५)	बारहवे
(६)	सूक्ष्म-स्थावर
(७)	जिनकलश
(८)	श्री सूत्रकृतांग
(९)	श्री शत्रुंजयगिरिपर अदबुद
(१०)	मस्तक
(११)	संज्ञारहित
(१२)	उत्कृष्ट शुद्धि
(१३)	मुंगीपट्टण
(१४)	कोणिक राजा
(१५)	दृष्टिवादोपदेशिका

(५)	भजना
(६)	पुरुषवेद
(७)	स्थावर
(८)	धारण करके
(९)	त्रेसठ
(१०)	कहलाता है
(११)	उपसर्गो
(१२)	पुण्यशालीओ
(१३)	विकलेन्द्रिय
(१४)	नही होता
(१५)	दीर्घ
(१६)	मै
(१७)	करते है
(१८)	उपदेशिकि
(१९)	नपुंसकवेद
(२०)	तत्पर

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	जाता है
(२)	धारण
(३)	बोलते है
(४)	चार

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	८	(६)	४
(२)	६	(७)	2
(३)	९	(८)	५
(४)	१	(९)	3
(५)	१०	(१०)	७

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	१६
(२)	३६
(३)	वि.स १२५६
(४)	६
(५)	20
(६)	१७
(७)	९
(८)	१६ अंगुल
(९)	१३
(१०)	३

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	29
(२)	×	(२)	20
(३)	×	(३)	१०
(४)	✓	(४)	५
(५)	×	(५)	२४
(६)	✓	(६)	४
(७)	✓	(७)	१६
(८)	×	(८)	८
(९)	×	(९)	२
(१०)	✓	(१०)	१८

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____ जांचनेवाले की सही ____

प्रश्न - ८

१. पुण्यशालीओ जिनेश्वर की स्नात्रक्रिया प्रसंग पर विविध प्रकार की नृत्य, रत्न और पुष्प की वर्षा करते है. अष्टमंगलादि का आलेखन करते है, मांगलिक स्तोत्र गाते है, तीर्थंकरो के वंश, गोत्रों के नाम तथा मंत्र बोलते है॥ संपूर्ण विश्व का कल्याण हो। सभी परोपकार में तत्पर बनो। व्याधि, दुःख, दौर्मनस्यादि नाश हो और सभी जगह मनुष्य सुख भोगनेवाले बने॥२१॥ मैं श्री अरिष्टनेमि तीर्थंकर की माता शिवादेवी तुम्हारे नगर में रहती हूं। इसलिये हमारा और तुम्हारा श्रेय हो, उसी प्रकार उपद्रवों का नाश करनेवाला कल्याण हो॥२२॥ श्री जिनेश्वर देव का पूजन करने से सभी प्रकार के उपसर्गों का नाश होता है। विघ्नरुपी बेलों का छेद हो जाता है और मन प्रसन्नता से भर जाता है॥२३॥

२. छोटा जोसिंग अपना भावि मार्ग स्वेच्छा से पक्का कर सके ऐसे ख्याल से उसके माता-पिता ने उसे तीर्थयात्रा पर भेजा। यात्रा करते-करते वो श्री पंचासरा पार्श्वनाथ के दर्शनार्थ पाटण पहुंचा। जोसिंग ने महाराजा सिद्धराज की भी मुलाकात ली और उसने १ लाख टंक के मूल्य का हीरकजडित हार भेट में दिया। सिद्धराज ने उसे बेटा कहकर संबोधित किया और निजी व्यक्ती के रुप में सम्मान किया। राजा ने पाटण आने का प्रयोजन पूछने पर जोसिंग ने दीक्षा लेने की भावना प्रगट की। सिद्धराज की प्रेरणा से वो धराद में आचार्य आर्यरक्षितसूरि के पास गया। उधर उसकी एकाग्रता और बुद्धिमता से वे आश्चर्यचकित हो गये, आगमन का कारण सुनतेही उसे शिष्य रुप में स्वीकारा और वि.स. ११६७ में धराद में दीक्षा देकर 'यशचंद्र' ऐसा नाम रखा।

३. देवता, गर्भज मनुष्य और तिर्यंच एवं नारकी को छह पर्याप्ति होती है और स्थावर को चार पर्याप्ति होती है। देवता के १३ दंडक, गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच और नारकी के एक एक ऐसे कुल १६ दंडक को छह पर्याप्ति होती है। स्थावर के पांच दंडक को चार पर्याप्ति होती है। विकलेंद्रिय के ३ दंडक को पांच पर्याप्ति होती है। सब जीवों को छह दिशाओं का आहार होता है, परंतु वनस्पतिकायादि पांच स्थावर को पद के विषय मे भजना होती है। पर्याप्त तिर्यंच और मनुष्य निश्चय से चार प्रकार के देवों के गट में जाते है। १) भवनपति २) व्यंतर ३) ज्योतिष्क और ४) वैमानिक देव बन सकते है।

४. जिनवाणी का संग्रह ये जिनआगम है। पंचमकाल में संसारसागर से तरने के लिए जिनआगम और जिनप्रतिमा ये हमारे आधारस्तंभ है। आगम सब मिलकर पैंतालीस है। जिसमें से पयन्ना दश है। चउशरण पयन्ना, आतुर प्रत्याख्यान पयन्ना, भक्ति परिज्ञा पयन्ना, संस्तारक पयन्ना, महाप्रत्याख्यान पयन्ना, मरणसमाधि पयन्ना, इन छः पयन्नाओंमें अंतिम आराधना आदि का अधिकार अलग-अलग स्वरुप में संक्षिप्त में या विस्तार से वर्णन करते हुओ प्रसंग के अनुरुप अनेक जरुरी कथायें बो बतायी है।

५. क्षीणमोह गुणस्थान यह बारहवा गुणस्थान है, जिसमें शुक्लध्यान का दुसरा भेद होता है। बारहवे गुणस्थान में रहे हुओ क्षपक श्रेणीवाले साधु महात्मा को इस गुणस्थान में शुक्लध्यान का दुसरा भेद होता है। इस स्थान में क्षपक वीतराग होता है, विशेष राग द्वेष रहित होता है, यथाख्यात चारित्रवाला होता है, विशुद्ध भावयुक्त याने अच्छे-शुद्ध परिणामवाला होता है। इस गुणस्थान में स्थित साधु एक योग कर शुक्लध्यान के द्वितीय भेद का ध्यान करते है, वह ध्यान - अपृथक्त्व याने पृथकत्वरहित है। अविचार याने विचार रहित है। सवितर्क याने वितर्क गुणयुक्त है। इस गुणस्थान